स्नातक हिन्दी, द्वितीय खंड

तृतीय पत्र : आधुनिक काव्य (छायातप)

कवि सुमित्रानन्दन पन्त की 'पतझर' कविता : एक मूल्यांकन

प्रस्तोताः

डॉ. रमेश प्रसाद गुप्ता
सह–प्रोफेसर, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
रामदयालु सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

आधुनिक हिन्दी–साहित्य के एक प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कवि 'सुमित्रानंदन पंत' (1900–1977 ई.) 'छायावादी काव्य' के एक प्रतिनिधि कवि है, जिनकी ख्याति प्रकृति एवं मानवतावादी कवि के रूप में विशेष है। उनकी कविताओं में जहाँ प्रकृति का कोमल एवं चपल–चेतन रूप तथा प्रकृति के प्रति एक कौतुहल एवं जिज्ञासा अभिव्यक्त हुई है, वहीं व्यापक मानवतावादी दृष्टिकोण भी अभिव्यक्त हुआ है। उन्होंने अपनी आरंभिक कविताओं में प्रकृति के कोमल–मनोहारी और चपल रूप एवं अज्ञात प्राकृतिक सता के प्रति कौतुहल एवं जिज्ञासा प्रकट हुई है, वही परवर्ती कविताओं में पुराने का ध्वंस एवं नवीन जग–स्वप्न का निर्माण तथा मानवता के कल्याण की आकांक्षा अभिव्यक्त हुई है। डॉ. कृष्णदत पालीवाल कहते हैं कि ''युगांत (1934–36) आदि की कविताएँ, कवि के भाव–क्षेत्र में परिवर्तन का स्पष्ट संकेत देती है। लोक–चिन्ता ने यहाँ लोक–संवेदना को काव्यानुभूति का विषय बनाया है। सौंदर्य के प्रति कवि का अतिरिक्त आकर्षण कम होकर 'शिव' की ओर रूझान बढ़ जाता है।'' कवि सुमित्रानन्दन पंत की प्रस्वीकृत प्रस्तुत कविता कवि के युगान्त संग्रह की प्रथम कविता है, जिसमें कवि ने जग–चिंता एवं जग नव–निर्माण को केन्द्रित किया है।

आधुनिक हिन्दी के प्रतिनिधि कवियों एवं उनकी कविताओं के प्रस्वीकृत पाठ्य संकलन 'छायातप' में संकलित 'पतझर' कविता में कवि एक ओर पुरातन–शीर्ण को ध्वंस्त करने का आकांक्षी है तो दूसरी ओर वह नवनिर्माण की भावनाओं से प्रेरित है। कवि सुमित्रानन्दन पंत प्राकृतिक क्रिया–चक्र 'पतझर' के माध्यम से पुराने जड़ कमजोर (क्षीर्ण) के ध्वंस एवं नये पल्लव के माध्यम से नये जीवन–स्वप्न के निर्माण के आकांक्षी हैं। प्रस्वीकृत प्रस्तुत कविता के प्रारंभिक अंश में कवि पन्त जगत–जीवन के पुराने (जीर्ण) पत्रों को शीघ्र झर जाने का आह्वान करते हैं। इस अंश में त्रस्त–ध्वस्त (गले–झरे) सूखे हिम–ताप से पीले

पड़े वासंती हवा से भयभीत जड़–पुराने वीतरागी पत्रों प्रकारान्तर से पुराने जड़–ध्वस्त मूल्यों को शीघ्र झर जाने का आह्वान करते हैं।

प्रस्तुत कविता के दूसरे अंश में उसी भावधारा की कड़ी में कवि निष्प्राण (मृत) बीते समय (युग) और मृत पंछी (विहंग)– सदृश जो संसार के घोंसले (जग–नीड़) और शब्द व श्वासहीन एवं उड़ान भरने पंखों से च्युत हो चुका है, को झर–झरकर शीघ्र अनन्त में विलीन होने का आह्वान करता है। प्रस्तुत अंश में कवि प्रकारान्तर से पुराने बीते समय के जड़ विचारों एवं मरी कल्पना को शीघ्र ही छोड़ने और त्यागने का आह्वान करता है। जैसे पतझर में हिम, ताप आदि मौसम के मारे पुराने पीले कमजोर पत्ते झर जाते हैं, वैसे ही पुराने जड़ मूल्यों एवं विचारों को छोड़ना श्रेयस्कर है।

प्रस्तुत कविता के तीसरे अंश में कवि नये पतझर के उपरांत नये पल्लव के माध्यम से एक नये जीवन–युग के निर्माण का सन्देश देता है। कवि पतझर के पश्चात सूखी–नंगी डालियों में लालिमा युक्त नये पल्लवों के फूटने–खिलने का संकेत देता है, जो प्राणों के स्पंदन से मुखरित जीवन की भरी–पूरी हरियाली (नवनिर्माण) के प्रतीक स्वरूप हैं। प्रस्तुत कविता के अंतिम अंश में कवि पतझर पश्चात् वसंत के नव–पल्लव एवं नव–मंजर तथा कोयल की कूक–सदृश नये युग के निर्माण का संकेत देता है, जो नये जीवन एवं यौवन के उत्साह से परिपूर्ण है। प्रस्तुत अंश में कवि वसंत–सदृश एक नये जीवन एवं यौवन के निर्माण का आकांक्षी है, जो उसकी भविष्य–दृष्टि एवं स्वप्न का प्रतीक है।

प्रस्तुत प्रस्वीकृत कविता के द्वारा कवि सुमित्रानंदन पंत पुराने जड़–शीर्ण शीर्षक सामंती युग के समाप्ति एवं एक नये उन्मुक्त मानवतावादी समाज के निर्माण के आकांक्षी हैं। कवि पन्त ने इस हेतु प्राकृतिक क्रिया–चक्र 'पतझर' को अपना प्रिय प्रतीक एवं आलम्ब बनाया है और उसके माध्यम से जड़–शीर्ण पुराने मूल्यों, विचारों की शीघ्र समाप्ति का आह्वान करता है तथा एक नये उन्मुक्त यौवन एवं उत्साह–भरे समाज के निर्माण को प्रेरित करता है। वस्तुतः सुमित्रानन्दन पंत ने अपने कल्पना–लोक एवं मोह से बाहर निकलकर जीवन के यथार्थ एवं एक नये समाज के निर्माण का आदर्श रचते हैं। जो उनकी सजगता एवं प्रगतिशीलता का परिचायक है।

♣♣♣♣♣